

पाठ-३

तीर्थंकर और भगवान

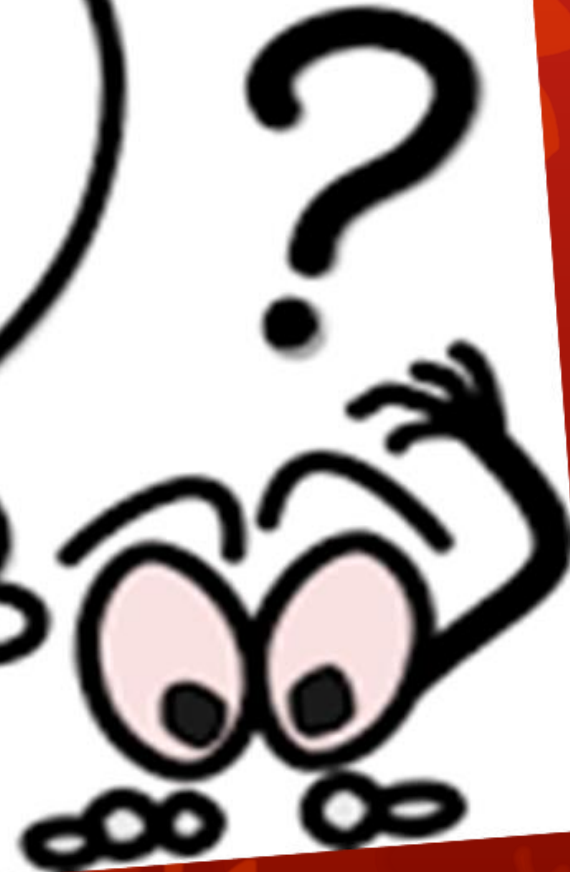


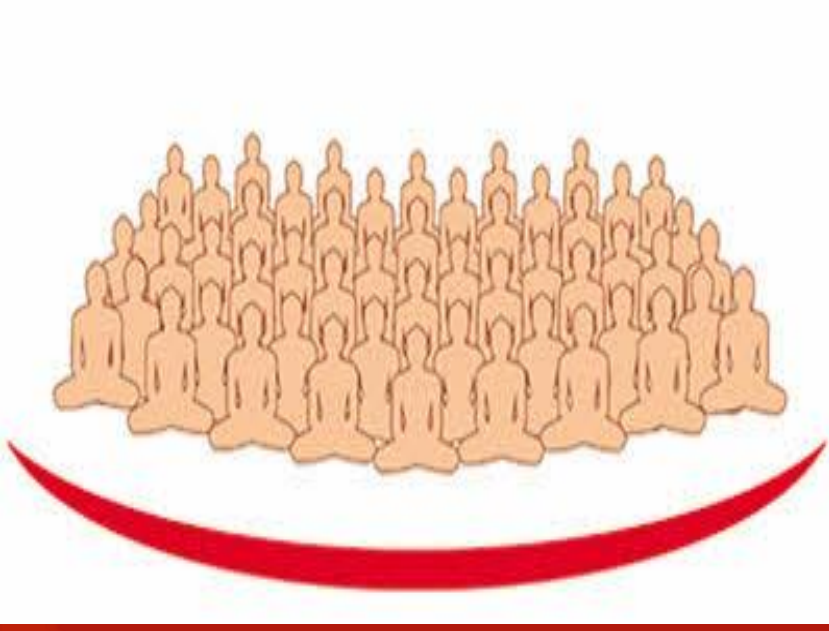
प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

भगवान किसे
कहते हैं?





➤ जो वीतरागी
➤ और सर्वज्ञ हैं,
वे सभी भगवान हैं ।

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

वीतरागी
किसे
कहते हैं?



- वीत + राग = बीत गया है राग जिनका
- जिनके मोह, राग, द्वेष नष्ट हो गये हैं



प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

किसी को
भला जानकर
चाहना

पर (दूसरे) में
अपनापन मानना

किसी को बुरा
जानकर दूर
करना चाहना



राग किसे कहते हैं?

मोह किसे कहते हैं?

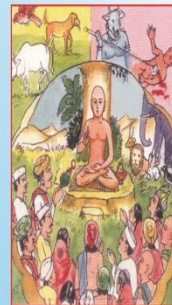
द्वेष किसे कहते हैं?

सर्व प्रथम मोह नष्ट होता है

फिर राग - द्वेष

इसलिये वीतरागी होने से पहले
वीतद्वेषी, वीतमोही हो जाते हैं

सर्व + ज्ञ =
सभी को + जानें

[illegible]

सर्व मतलब

सभी पदार्थ

सभी का भूत,
भविष्य, वर्तमान

एक साथ जानें

सिद्ध
भगवान



वीतरागी
सर्वज्ञ होते हैं

अरहंत और सिद्ध
दोनों ही भगवान हैं

अरहंत
भगवान



वीतरागी सर्वज्ञ तो
होते ही हैं

साथ ही हितोपदेशी
भी हो सकते हैं

हितोपदेशी किसे कहते हैं?

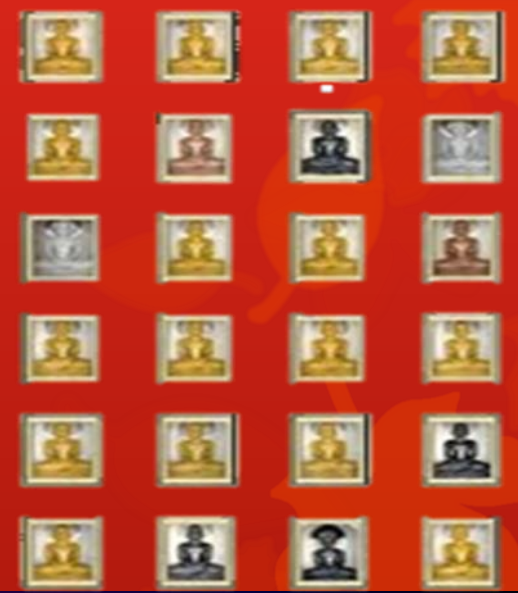


हित + उपदेश =

- जो हित(अर्थात् सुखी होने) का उपदेश देवें
- जो अच्छा और सच्चा उपदेश देवें



तीर्थंकर तो भगवान होते ही हैं



अन्य भी जो वीतरागी और सर्वज्ञ हों,
वे भी भगवान होते हैं,
जैसे: राम, बाहुबलि, हनुमान, भरत
इत्यादि



तीर्थंकर किसे कहते हैं?

- जो धर्मतीर्थ (मुक्ति का मार्ग) का उपदेश देते हैं,
- समवशरण आदि विभूति से युक्त होते हैं
- जिनके कल्याणक होते हैं
- और जिनको तीर्थंकर नामकर्म नाम का महापुण्य का उदय होता है

तीर्थंकर कितने
होते हैं ?

२४ होते हैं

- १. ऋषभदेव
- २. अजितनाथ
- ३. सम्भवनाथ
- ४. अभिनन्दन
- ५. सुमतिनाथ
- ६. पद्मप्रभ
- ७. सुपार्श्वनाथ
- ८. चन्द्रप्रभ
- ९. पुष्पदन्त
- १०. शीतलनाथ
- ११. श्रेयान्सनाथ
- १२. वासुपूज्य
- १३. विमलनाथ
- १४. अनन्तनाथ
- १५. धर्मनाथ
- १६. शान्तिनाथ
- १७. कुन्थुनाथ
- १८. अरनाथ
- १९. मल्लिनाथ
- २०. मुनिसुव्रत
- २१. नमिनाथ
- २२. नेमिनाथ
- २३. पार्श्वनाथ
- २४. महावीर

२४ तीर्थंकरों के नाम का छंद

ऋषभ१ अजित२ सम्भव३ अभिनन्दन४,
सुमति५ पद्म६ सुपार्श्व७ जिनराय ।

चन्द्र८ पुहुप९ शीतल१० श्रेयान्स११ जिन,
वासुपूज्य१२ पूजित सुरराय ॥

विमल१३ अनन्त१४ धर्म१५ जस उज्ज्वल,
शान्ति१६ कुन्थु१७ अर१८ मल्लि१९ मनाय ।

मुनिसुव्रत२० नमि२१ नेमि२२ पार्श्व२३ प्रभु,
वर्द्धमान२४ पद पुष्प चढ़ाय ॥

एक से अधिक नाम वाले तीर्थंकर

आदिनाथ भगवान

ऋषभदेव

पुष्पदंत भगवान

सुविधिनाथ

महावीर भगवान

वीर, अतिवीर,
वर्द्धमान, सन्मति

तीर्थंकर और भगवान में समानता

दोनों ही

वीतरागी

सर्वज्ञ

होते हैं

तीर्थंकर और भगवान में अंतर

भगवान	तीर्थंकर
सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते	सभी तीर्थंकर भगवान होते हैं
भगवान अरहंत-सिद्ध दोनों पद पर होते हैं	तीर्थंकर सिर्फ अरहंत पद पर ही होते हैं
भगवान अनंत होते हैं	तीर्थंकर २४ होते हैं

तीर्थंकर और भगवान में अंतर

भगवान

भगवान हितोपदेशी हों
भी, न भी हों

भगवान की धर्मसभा को
गंध कुटी कहते हैं

तीर्थंकर

तीर्थंकर अनिवार्य रूप से
हितोपदेशी होते हैं

तीर्थंकर की धर्मसभा को
समवशरण कहते हैं

तीर्थंकर और भगवान में अंतर

भगवान

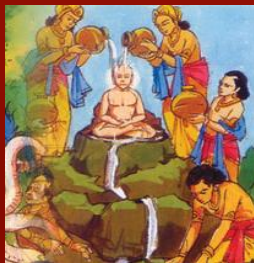
भगवान किसी कर्म के
उदय से नहीं बनते

भगवान के कल्याणक
नहीं होते

तीर्थंकर

तीर्थंकर तीर्थंकर- नामकर्म
का फल है

तीर्थंकरों के कल्याणक
होते हैं



इनके जानने से क्या लाभ है ?

इनके उपदेश को
समझकर उस पर चलने
से हम सब भी भगवान
बन सकते हैं।

